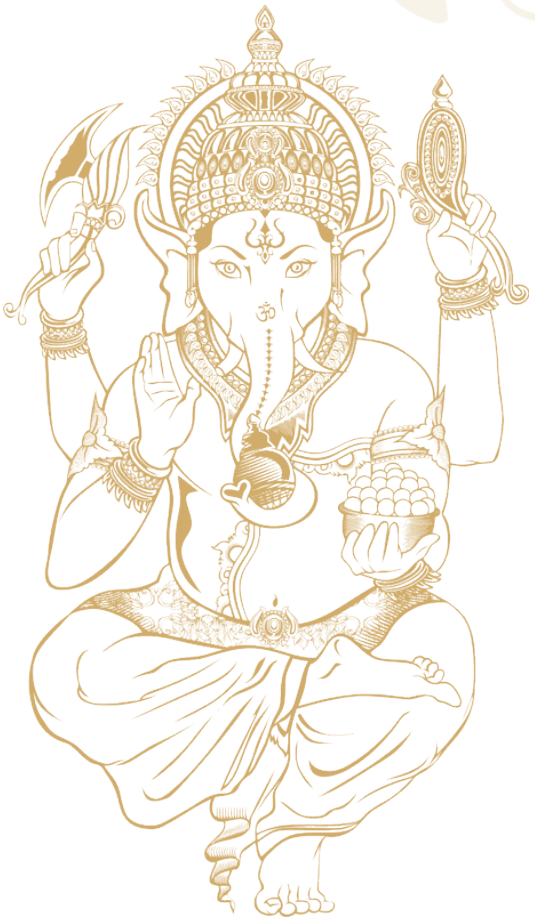

Mr.yash

Ms.D

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120138203

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
20/05/2000	जन्म तिथि	09/08/2001
शनिवार	दिन	गुरुवार
घंटे 20:45:00	जन्म समय	17:15:00 घंटे
घटी 37:31:57	जन्म समय(घटी)	28:05:16 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Indore
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:42:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	75:54:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:26:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:44:13	सूर्योदय	06:00:53
19:01:57	सूर्यास्त	19:02:27
23:51:28	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:30

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 0मा 20दि	29:35:23	वृश्चि	लग्न	धनु	24:57:50	बुध 12वर्ष 1मा 9दि
शुक्र	06:02:21	वृष	सूर्य	कर्क	23:04:37	शुक्र
10/06/2006	01:48:01	धनु	चंद्र	मीन	20:30:08	18/09/2020
10/06/2026	17:51:11	वृष	मंगल	वृश्चि	24:03:17	18/09/2040
शुक्र 09/10/2009	19:18:52	वृष	बुध	कर्क	26:55:46	शुक्र 19/01/2024
सूर्य 10/10/2010	26:58:36	मेष	गुरु	मिथु	11:56:43	सूर्य 18/01/2025
चन्द्र 09/06/2012	00:09:03	वृष	शुक्र	मिथु	15:20:05	चन्द्र 19/09/2026
मंगल 10/08/2013	27:50:33	मेष	शनि	वृष	19:03:33	मंगल 19/11/2027
राहु 09/08/2016	02:03:16	कर्क व	राहु व	मिथु	11:36:15	राहु 18/11/2030
गुरु 10/04/2019	02:03:16	मक व	केतु व	धनु	11:36:15	गुरु 19/07/2033
शनि 10/06/2022	26:57:27	मक	हर्ष व	मक	29:13:42	शनि 18/09/2036
बुध 10/04/2025	12:40:32	मक व	नेप व	मक	13:14:09	बुध 20/07/2039
केतु 10/06/2026	18:00:28	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	18:43:07	केतु 18/09/2040

लग्न-चलित

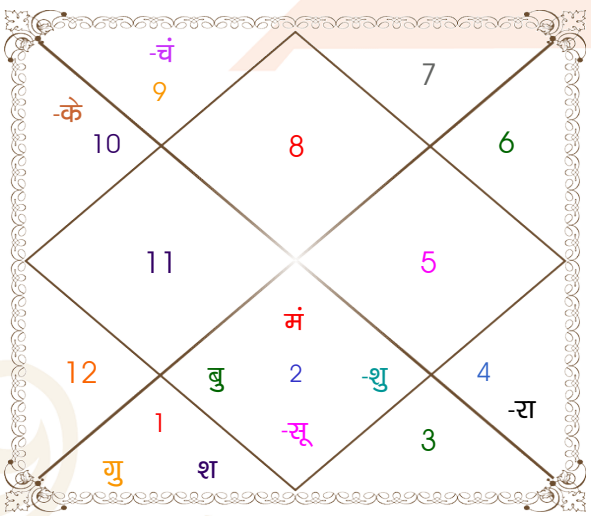

लग्न-चलित

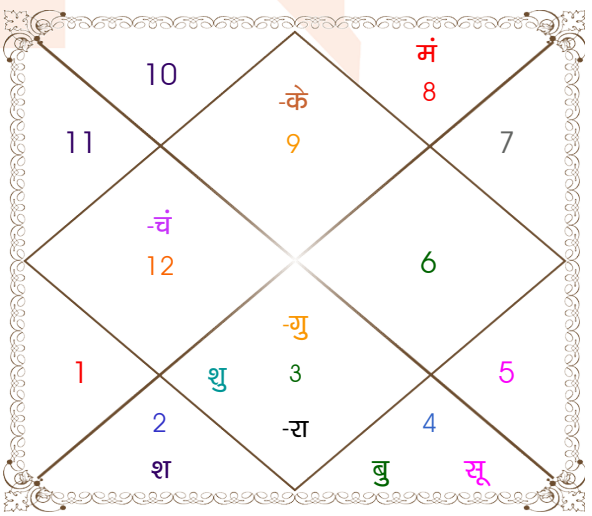

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	गज	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

Mr.yash का वर्ग मृग है तथा Ms.D का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.yash और Ms.D का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr.yash मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है। क्योंकि मंगल Mr.yash कि कुण्डली में सप्तम् भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms.D मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms.D कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Ms.D कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Ms.D कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Ms.D कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr.yash कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr.yash तथा Ms.D में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।